Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN: 2581-6241 Volume - 2, Issue - 6, Nov-Dec – 2019
Bi-Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 1.847
Received on : 10/12/2019 Accepted on : 23/12/2019 Publication Date: 30/12/2019

नारी विमर्श
अस्तित्व और अस्मिता की तलाश - आत्मख़ोज

डॉ. अनु मेहता
प्रभारी प्राचार्या & विभागाध्यक्ष (हिंदी)
आनंद इंस्टिट्यूट ऑफ़ पी. जी स्टडीज इन आर्ट्स, आनंद, गुजरात
Email - dranumehta@gmail.com

सारांश : स्त्री एक ऐसा व्यक्तित्व है जिसकी छांव तले जीवन सांस लेता है, संबंध आकार लेते हैं, प्रेम पल्लवित होता है और मानवता पुष्पित होती है । स्त्री एक समर्थ तथा सशक्त व्यक्तित्व है । इस लेख का उद्देश्य स्त्री के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर एक नजर डाल हर स्त्री को आत्म खोज के लिए प्रेरित- प्रोत्साहित कर उसे अपने अस्तित्व की अहमियत का एहसास दिलाना है तथा स्त्री सशक्तिकरण के प्रवाह को और वेग देना है । यही भीतर की खोज स्त्री को आर्ट ऑफ लिविंग प्रदान कर संपूर्णता की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करेगी।

मुख्य बिंदु : अस्तित्व , अस्मिता, आत्मखोज, सशक्तिकरण, सकारात्मकता.

१.प्रस्तावना :

अपने लेख की शुरुआत मैं बी. आर चोपड़ा द्वारा निर्देशित स्त्री हेतु प्रस्तुत की गई एक कॉमेंट्री के संवाद से शुरू करूंगी जिसमें एक स्त्री अपनी दर्द भरी आवाज में शायद पूरी स्त्री जाति की वेदना और वास्तविकता का बयान करती हुई आत्म निरीक्षण करती है पुनर्मूल्यांकन करती है, सवाल उठाती है ।वह कहती है - मैं औरत हूं ,औरत ,औरत हौवा की बेटी, आसमान से भेजी गई वह पाक बूंद ,जो सदियों से इस सरजमीन को सींचतीज्ञचली आ रही है । मैं औरत हूँ ,मैंने ही प्यार के रंग- बिरंगे फूल खिला कर इस दुनिया को जन्नत बनाया ,मैंने ही अपनी कोख से मर्द को जन्म दिया ।मां बनकर उसे पांव पर चलना सिखाया तो बहन बनकर उसके बालपन को चुलबुली कहानियां दी ,महबूबा बन कर उसकी जिंदगी को रेशमी लम्हों में ढाला तो शरीके हयात बन कर उसकी जिंदगी को सजाया। मैंने ही वक्त पड़ने पर कंधे से कंधा मिलाकर कंटीली राहों में दोस्त बनकर उसका साथ दिया और यह सब करते हुए अपना वजूद खो कर मैं औरत, नूर की वह बूंद मर्द में पूरी की पूरी समा गई ।मेरी इस बेमिसाल कुर्बानी की कहानी को हर मजहब ने सुनहरे अल्फ़ाज़ में लिखा। मुझे उन बुलंदियों पर बिठा दिया गया ,जहां पहुंचकर इंसान खुदा हो जाता है ,लेकिन यह हकीकत नहीं भरम था ,रेगिस्तान में पानी के जजीरे जैसा भरम ,जिसके टूटते ही आज सदियां बीत जाने तक हर लम्हा मुझे यही डर सताए रहता है कि ना जाने कब ऊंचाई से गिरा दी जाऊं, किसी कोठे पर धकेल दी जाऊं, कब जुए में दांव पर लगा दी जाऊं, कब अपनी पाकीज़गी का सबूत देने के लिए मुझे शोलों से गुजरना पड़े ,कब जन्मते ही मार डाली जाऊं,कब हवस के मीना बाजार में नीलाम कर दी जाऊं, कब निकाह करके अपनाई जाऊं तो तलाक देकर ठुकराई जाऊं और कब मेरी इज्जत का रखवाला मर्द मुझे अपने ही हाथों की बेआबरू कर डालें क्योंकि मैं एक औरत हूं । इस कमेंट्री की उपरोक्त पंक्तियां हमें भीतर तक झकझोर देती हैं और नारी की स्थिति पर सोचने के लिए हमें मजबूर कर देती हैं । प्रस्तुत संवाद में एक स्त्री अपनी पीड़ा को बयान कर हर स्त्री को आत्म खोज करने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं। उसे अपने जीवन का ध्येय और अपनी अस्मिता और अस्तित्व की तलाश के लिए ललकारती है।

२. अस्तित्व और अस्मिता की तलाश :

समय साक्षी है कि स्त्री की स्थिति-भूमिका और समाज में उसका स्थान समय-समय पर बदलता रहा है।मेरे इस प्रपत्र का उद्देश्य भी स्त्री के अतीत, वर्तमान और भविष्य पर एक नजर डाल उसे आत्म खोज के लिए प्रेरित-प्रोत्साहित कर अपने अस्तित्व की अहमियत का एहसास दिलाना है तथा स्त्री सशक्तिकरण के प्रवाह को वेग देना है।वैदिक काल से लेकर 21 वीं सदी तक के कालक्रम का स्त्री का सफर बहुत कठिन, संघर्षपूर्ण और चुनौतियों से भरा रहा है।

समय की धारा और समाज के प्रवाहों ने कभी नारी को देवी कहकर सिर पर बिठाया तो कभी दानवी कह कर पैरों तले रौंद दिया । देवी और दानवी के दो छोरों के बीच टकराती स्त्री स्वयं एक मानव है ,उसका अपना वजूद है , यह जानने- समझने के लिए स्त्री को बहुत जद्दोजहद करनी पड़ी , बहुत लंबा सफर तय करना पड़ा । शिक्षा और नौकरी से वंचित रख खुद की पहचान से बेगाना रखने की सदियों पुरानी साजिश के तहत उसे कभी रीति-रिवाजों के नाम पर कभी लाज- शर्म मर्यादा की दुहाई देकर असंख्य बेड़ियां पहना दी गई ।उसे इन बंधनों को अनिवार्य रूप से स्वीकार ने पर मजबूर किया गया । बड़े लुभावने ढंग से स्त्री को अपने ही अस्तित्व से अलग किए जाने के तरीके ढूंढे गए । उसे मां ,बहन ,बेटी ,पत्नी की भूमिका में इस तरह से बांधा गया कि वह यह बिलकुल भूल गई कि उसका खुद का भी अस्तित्व है । वह यह मानकर संतुष्ट होती रही कि वह इतनी सारी भूमिकाओं का निर्वाह बड़ी संजीदगी और निष्ठा से कर पा रही है, किंतु वह यह विस्मृत ही कर गई कि खुद के प्रति भी उसका कोई कर्तव्य है। उसने इन भूमिकाओं को ही अपना सर्वस्व, अपना अस्तित्व मान लिया और खुद को तलाशने की जरूरत उसने कभी महसूस ही नहीं की ।

स्त्री के सफर को समझने के लिए जरा समय के विविध पड़ावों पर नजर डालें तो हम देखते हैं कि वैदिक काल में स्त्री का बहुत सम्मान था । समानता ,स्वतंत्रता ,साहित्य पढ़ने –लिखने, शिक्षा ग्रहण करने ,धार्मिक विधि-विधानों में सम्मिलित होने,अपनी पसंद से विवाह करने आदि अधिकार उसे प्राप्त थे । उसे अर्धांगिनी का दर्जा मिला हुआ था ।घोषा,अपाला उस समय की सुप्रसिद्ध विदुषियां थी ।

मध्य काल में स्त्री की दशा बहुत अच्छी नहीं थी । जौहर ,सती प्रथा, पर्दा प्रथा ,बाल -विवाह जैसी कुरीतियों ने स्त्री के जीवन को नरकागार बना दिया था । स्त्री शिक्षा नहिवत थी । उसे एक भोग की वस्तु और संतान उत्पति का साधन मात्र माना जाता था । मध्यकाल में समाज में उसका सम्मांनजनक स्थान नहीं था ।

आधुनिक काल तक आते-आते स्त्री की स्थिति में बहुत परिवर्तन दिखाई देने लगा । 19वीं सदी में अनेक सामाजिक कार्यकरों, विद्वानों ,महापुरुषों ,साहित्यकारों, राजनेताओं आदि ने इन कुरीतियों का विरोध कर स्त्री उत्थान, स्त्री शिक्षा और स्त्री सशक्तिकरण के लिए कई ठोस प्रयास किए । अंग्रेजों से आजादी की लड़ाई में कई स्त्रियों जैसे रानी लक्ष्मी बाई, सरोजिनी नायडू ,विजयालक्ष्मी कस्तूरबा गांधी ,कमला नेहरू, एनी बेसेंट आदि ने बहुत सशक्त भूमिकाएं अदा की । स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद इंक्रेडिबल इंडिया यानी अतुल्य भारत का दौर शुरू हुआ तथा स्त्री के जीवन में भी बदलावों का नया दौर शुरू हुआ। उसने अनेक बेड़ियों को तोड़ने में सफलता प्राप्त की तथा विश्व में हर क्षेत्र में अपना एक सम्मानजनक स्थान बनाए रखने में कामयाबी हासिल की ।

बीसवीं सदी के पूर्वार्ध को स्त्री जागरण का युग कहा जाता है और उत्तरार्ध को स्त्री प्रगति का युग कहा जाता है। 21वीं सदी को स्त्रियों की सदी बनाने की घोषणा की जा रही है। इस पुरुष प्रधान समाज में स्त्री जीवन के सफर का इतिहास भले ही विडंबना और अंतर्विरोधों से परिपूर्ण रहा है, किंतु आज 21वीं सदी में वैश्वीकरण और टेक्नोलॉजी के युग में स्त्री हर क्षेत्र में जीत के डंके भी बजा रही है । साथ ही इस तथ्य को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता कि आज महिलाओं के प्रति अपराधों में भी बेहद इजाफा हुआ है जिससे उसकी

सुरक्षा और उन्नति पर प्रश्नचिन्ह खड़े हो गए हैं ।आज भ्रूण हत्या, बलात्कार, यौन उत्पीड़न ,घरेलू हिंसा, अपहरण,असमानता मानवाधिकार हनन ,दहेज हत्या आदि समस्याएं स्त्री के लिए बड़ा खतरा बनी हुई है।इन सब चुनौतियों , अवरोधों, समस्याओं के बावजूद स्त्री अपने अस्तित्व और अस्मिता की तलाश में लगी हुई है और अपना एक अलग वजूद खड़ा करने में प्रयासरत दिखाई देती है । आज इस वैश्वीकरण के समय में सूचना प्रौद्योगिकी और ज्ञान विस्फोट के कारण स्त्री स्वतंत्र सोच रखने वाली ,स्वाभिमानी आत्मनिर्भर, निर्भीक ,अपने अधिकारों के प्रति सजग, दृढ़ निश्चय से भरपूर व्यक्तित्व के रूप में उभर कर सामने आई है ।

शायद ही ऐसा कोई क्षेत्र हो जिससे जहां स्त्री ने अपने कदम ना जमाए हो या अपनी उपस्थिति दर्ज ना कर आई हो ।साहित्य के क्षेत्र में भी महिला लेखन बेहद समृद्ध हुआ।इस साहित्य में स्त्री अपनी बेचारगी और बेबसी का रोना नहीं रोती बल्कि विद्रोह करती हैं,अपनी आवाज उठाती है ,अन्याय का प्रतिकार करती है, अपने हक के लिए लड़ती है ,अपने निर्णय स्वयं लेने की हिम्मत रखती है तथा अपना जीवन अपनी शर्तों पर जीती है।

आर्थिक स्वतंत्रता इस समय की स्त्री की सबसे बड़ी उपलब्धि है और इस आर्थिक स्वतंत्रता ने उसे मानसिक गुलामी से मुक्ति देने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई है ।अब तक के इस सफर की एक अन्य उपलब्धि यह भी है कि कई सदियों से पुरुष स्त्री को सिर्फ अपने नजरिए से देखता- परखता आ रहा है ,व्यवहार करता आ रहा है, किंतु अब स्त्री स्वयं को पुरुष के नजरिए से नहीं बल्कि अपने नजरिए से देख रही है ।इस संदर्भ में हिंदी की प्रसिद्ध लेखिका श्रीमती मैत्रेयी पुष्पा का कथन बेहद तर्कसंगत लगता है। वह कहती हैं - आज तक स्त्रियों के लोकतंत्र का संविधान पुरुष बना रहे थे । आज वे स्वयं बना रही है। यह मेरा जीवन है, यह मेरी अस्मिता है ,इसका नियमन मैं करूंगी ,केवल मैं....। स्त्री ने खुद को बदल कर आज बहुत हद तक समाज को भी बदलने का आंदोलन चला रखा है । वह शोषण और लिंग भेद का डटकर सामना कर रही है। जिस प्रकार हर सिक्के के दो पहलू होते हैं उसी प्रकार आज बदलाव तो आया है लेकिन अपवाद भी बहुत है।पूरी स्त्री जाति में अभी भी अपेक्षित परिवर्तन बाकी है । सिर्फ कुछ प्रतिशत स्त्रियों के आगे बढ़ने और उपलब्धि हासिल करने से संपूर्ण जाति का उद्धार हो गया हो, ऐसा तो नहीं कहा जा सकता है ।अपने उद्धार के लिए ,अपने अस्तित्व से रूबरू होने के लिए अपने जीवन ध्येय को पहचानने के लिए जरूरी है कि स्त्री आत्म खोज करें ,खुद की अस्मिता की तलाश स्वयम करें।

३. आत्मखोज :

आत्म खोज करना इतना भी सरल नहीं है 1 यह खोज तप मांगती है ।आत्मखोज के लिए एक बहुत जरूरी और सुंदर अनुभव है ।खुद की खोज में निकलने से पहले स्त्री को अपनी शक्ति और सीमाओं को जानना होगा ,अपने जुनून और डर को पहचानना होगा अपनी इच्छाओं और सपनों को समझना होगा, अपनी पसंद-नापसंद पहचाननी होगी, अपने साहस को जगाना होगा ,खुद अपने से और अपनों से भी लड़ना होगा ,अपनी अंतरात्मा की आवाज को तरजीह देनी होगी, खुद का ध्येय और रास्ता तय करना होगा, खुद के फैसलों पर विश्वास करना होगा, अपनी वैल्यू(कदर) खुद करनी होगी ,स्वयं को स्वीकारना होगा, सफलता -असफलता ,चुनौती और संघर्ष के लिए तैयार रहना होगा ,अपने डर पर विजय हासिल करनी होगी ।आत्म खोज का मार्ग बहुत सरल नहीं है मगर जरूरी है कि आप स्पष्ट रहे कि आप क्या चाहते हैं यदि आप स्पष्ट हैं तो आप अडिग हैं और दुनिया की कोई ताकत आपके निर्णयों को प्रभावित नहीं कर सकती ,आप को हिला नहीं सकती ।लोग क्या कहेंगे जैसे बेतुके सवाल आपको परेशान नहीं करेंगे ।बाहरी प्रश्नों से ज्यादा आप भीतर के प्रश्नों को सुलझाने का प्रयास करेंगे ।अगर स्त्री खुद को पहचान गई अगर उसने आत्मखोज कर ली तो वह अनेक भ्रमों ,समस्याओं और तनावों से दूर हो ,मानसिक शांति और खुशी का अनुभव कर सकेगी ।अपनी कमजोरियों पर नियंत्रण पा अपनी शक्तियों का अधिकतम सकारात्मक संदर्भ में उपयोग कर जीवन ध्येय सिद्ध कर सकेगी ।

४. उपसंहार :

निष्कर्षत: कह सकते हैं कि आत्मखोज के कारण ही जीवन यात्रा के अंत में उसे कोई दुख या पश्चाताप नहीं होगा तथा उसका जीवन सार्थक होगा। यही आत्मा खोज उसे शारीरिक मानसिक भावनात्मक स्वास्थ्य के लिए प्रेरित कर आर्ट ऑफ लिविंग का नुस्खा प्रदान कर संपूर्णता की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करेगी। प्रपत्र के अंत में त्न वीर जी द्वारा लिखित और सुप्रसिद्ध अभिनेता अमिताभ बच्चन जी की मो हक आवाज में प्रस्तुत पिंक फिल्म की कविता को प्रस्तुत करना चाहूंगी, जिसमें स्त्री को उसकी खोज करने के लिए स्थितियों से ना हार ना मानने के लिए जीवन पथ पर आगे बढ़ने के लिए आह्वान किया गया है। कविता के बोल हैं -

तू खुद की खोज में निकल
तू किस लिए हताश है
तू चल ,तेरे वजूद की समय को भी तलाश है
तू खुद की खोज में निकल..
जो तुझसे लिपटी बेड़ियां
समझ न इनको वस्त्र तू
यह बेड़ियां पिघाल के
बनाले इन को शस्त्र तू
तू खुद की खोज में निकल..
चरित्र जब पवित्र है
तो क्यों है यह दशा तेरी
ये पापियों को हक नहीं
कि ले ले परीक्षा तेरी
तू खुद की खोज में निकल..
जला कर भस्म कर उसे
जो क्रूरता का जाल है
तू आरती की लौ नहीं
तू क्रोध की मशाल है
तू खुद की खोज में निकल...
चुनर उड़ा के ध्वज बना
गगन भी कंपकंपाएगा
अगर तेरी चुनर गिरी
तो एक भूकंप आएगा
तू खुद की खोज में निकल....
तू किस लिए हताश है
तू चल, तेरे वजूद की समय को भी तलाश है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

१. अरोरा,डॉ.सुधा.*औरत की कहानी.* भारतीय ज्ञानपीठ, दिल्ली, 2008.
२. नसरीन,तसलीमा.*औरत के हक में.* वाणी प्रकाशन,दिल्ली , 2007.
३. शर्मा,गीतेश.*धर्म के नाम पर.* राजकमल प्रकाशन,दिल्ली, 2013.
४. चोपड़ा,बी.आर.निर्देशित फिल्म *निकाह* की डॉक्यूमेंटरी से उद्दृत संवाद.
५. चौधरी , अनिरुद्ध राय. निर्देशित फिल्म *पिंक* से उद्दृत काव्य.